संस्थाध्यक्षों हेतु स्वः अधिगम सामग्री

अधिगम क्षेत्र – विद्यालय नेतृत्व का दृष्टिकोण

National Institute of Educational Planning and Administration (Deemed to be University)
National Centre for School Leadership

उत्तराखण्ड में छात्रों की अधिगम प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी हेतु संस्था प्रमुख की भूमिका

स्कूल लीडरशिप एकेडमी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट) उत्तराखण्ड, देहरादून

उत्तराखण्ड में छात्रों की अधिगम प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी हेतु संस्था प्रमुख की भूमिका

प्रस्तावना

बच्चों के सर्वांगीण विकास में परिवार, समाज व विद्यालय के साथ सभी हितधारको का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जहां विद्यालय में शिक्षकों पर छात्रों के बौद्धिक विकास के साथ–साथ जीवन के विभिन्न कौशलों को विकसित करने की जिम्मेदारी होती है, वहीं अभिभावक और माता–पिता भी अपनी सक्रिय भागीदारी से अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। साथ ही उन्हें सकारात्मक दिशा में विकसित होने में मदद कर रहे होते हैं। एक छात्र के बहुआयामी व्यक्तित्व निर्माण के लिए यह आवश्यक है, कि छात्रों, शिक्षक व अभिभावकों के बीच में निरंतर संवाद होता रहे। यदि विद्यालय प्रमुख इस तरह के संवाद के प्रति संवेदनशील, सजग व जागरूक हैं तो उनकी जिम्मेदारी हो जाती है, कि वे इन संवादों के लिए अवसर और मंच प्रदान करें। और स्वयं इनके क्रियान्वयन में प्रभावशाली नेतृत्व करें।

केस स्टडी :–

श्रीमती मेनका पौड़ी जनपद के दुर्गम राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केसुंदर में गणित विषय की अध्यापिका हैं। जो पिछले वर्ष ही इस विद्यालय में स्थानांतरित होकर आई हैं।

श्रीमती मेनका गणित में अपने नवाचारी प्रयोगों तथा सरल व रुचि पूर्ण शिक्षण के लिए जानी जाती हैं। लेकिन उन्होंने 4–5 माह के शिक्षण के पश्चात यह महसूस किया, कि बच्चों का अधिगम स्तर काफी न्यून है। साथ ही अधिकांश छात्र व छात्राएं उनके द्वारा दिए गए गृह कार्य के प्रति भी सजग नहीं हैं। बार–बार गृह कार्य की जांच करवाने के लिए कहने पर छात्र–छात्राएं अनुपस्थित रहने लगते हैं। श्रीमती मेनका ने जब यह बात अपनी प्रधानाध्यापक से साझा की तो उन्होंने बताया कि यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि व पशुपालन है। अधिकांश छात्र–छात्राएं इन कार्यों में अपने माता–पिता का सहयोग करते हैं। अभिभावक भी इनके पठन–पाठन के प्रति उदासीन हैं। एस0एम0सी0 व पी0टी0ए0 की बैठकों में में बुलाये जाने पर भी नहीं आते हैं, और यदि आ भी गए तो उनकी सक्रिय प्रतिभागिता नहीं रहती।

प्रधानाध्यापक का मत था कि गणित शिक्षिका के रूप में आप अपना सर्वश्रेष्ठ दे रही हैं, इससे अधिक आप कुछ नहीं कर सकते। अतः आप कर्म करें फल की चिंता छोड़ दें।

आपके लिए कुछ सवाल—

- *उपरोक्त वर्णित विद्यालय में अभिभावकों के अपने पाल्यों के पठन—पाठन के प्रति उदासीनता के क्या—क्या कारण हो सकते हैं?*
- *गणित जैसे विषयों में एक कम पढ़े लिखे अभिभावक की जागरूकता छात्र की शैक्षिक प्रगति पर क्या प्रभाव डालती है?*
- *विद्यालय प्रमुख के कहे वाक्य कि आप कर्म करो फल की इच्छा छोड़ दो से आप कितने सहमत हैं?*
- *एक संस्था प्रमुख होने के नाते आप इस परिस्थिति में क्या योजना बनायेंगे।*

पृष्ठभूमिः—

उत्तराखंड राज्य के कुल क्षेत्रफल का 86.07 प्रतिशत भाग पर्वतीय है, जबकि 13.93 प्रतिशत भाग मैदानी है। आज भी 90 प्रतिशत लोगों की आर्थिकी का स्रोत कृषि है। पर्वतीय भागों में कृषि कार्य और पशुपालन, मैदानी भागों की तुलना में अधिक श्रम और संसाधनों की मांग करते हैं। इन कार्यों में अत्यधिक परिश्रम के अतिरिक्त मानवीय संसाधन की भी आवश्यकता होती है। इस कारण कृषि को यहाँ लाभकारी व्यवसाय के रूप में नहीं देखा जाता।

कृषि कार्यों में बच्चे भी अपने माता पिता या अभिभावकों का हाथ बंटाते हैं। जिसके फलस्वरूप प्रायः अभिभावक अपने पाल्यों की पढ़ाई—लिखाई के प्रति उदासीन हो जाते हैं। जिससे वे अपने पाल्यों की शिक्षा पर अपेक्षित ध्यान नहीं दे पाते हैं। छात्रों की अधिगम प्रगति में वे स्वयं की भूमिका को नगण्य समझते हैं और इस कार्य हेतु वह समस्त दायित्व विद्यालय का मानते हैं। माता—पिता व अभिभावक शिक्षकों और विद्यालय के साथ आयोजित संवादों में प्रायः सक्रिय सहभाग नहीं कर पाते। उनकी उपस्थिति नाममात्र की ही हो पाती है।

फलतः इसका यह प्रभाव पड़ता है, कि बिना अभिभावकों की सहभागिता के छात्रों की सीखने की गति, उनकी समस्याओं, विभिन्न सकारात्मक व नकारात्मक परिवर्तन के कारणों की

पहचान व विश्लेषण नहीं हो पाता। जिसका शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है, कि विद्यालय प्रमुख अभिभावकों में जागरूकता, प्रसार व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए उपलब्ध समय व संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए ऐसी योजनाएं बनाएं ताकि अभिभावक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अपनी भूमिका के महत्व को समझें और अपने दायित्वों का निर्वहन करें।

मॉडयूल के उद्देश्य:—

1— विद्यालय प्रमुख छात्रों की अधिगम प्राप्ति में अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझ सकेंगे।

2— विद्यालय प्रमुख विद्यालय और अभिभावकों के बीच निरंतर व प्रभावी संवाद का वातावरण तैयार कर सकेंगे।

3— विद्यालय प्रमुख अभिभावकों से संपर्क करने व संवाद में निरन्तरता हेतु नवाचारी तरीके विकसित कर सकेंगे

4— संस्था प्रमुख अभिभावकों की भूमिका सुनिश्चित करने हेतु समस्त शिक्षकों को प्रेरित कर सकेंगे

अभिभावक शिक्षक संवाद हेतु नवाचारी कदम

1. बैठक नहीं, एक उत्सव :—

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कांडा, पौड़ी जनपद के कल्जीखाल विकासखंड में सतपुली कस्बे से 12 किलोमीटर दूर पौड़ी—कोटद्वार मार्ग पर स्थित है। वर्तमान में विद्यालय की छात्र संख्या 30 है। यहां पर प्रधानाध्यापक के पद पर श्रीमती लक्ष्मी नैथानी और सहायक अध्यापक के रूप में श्री दीपमणी खुगसाल कार्यरत हैं।

यह विद्यालय जनपद के श्रेष्ठ प्राथमिक विद्यालयों में गिना जाता है। यहां के छात्र—छात्राओं का अधिगम स्तर पूर्ण अपेक्षाओं के अनुरूप है। पाठ्य सहगामी क्रिया कलापों में यहां के छात्र—छात्राओं की सम्पूर्ण भागीदारी रहती है। फलतः वर्ष 2006 से 2019 तक निरन्तर

इस विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने विभाग द्वारा आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रत्येक वर्ष राज्य स्तर तक प्रतिभाग कर पहले तीन स्थानों में भी अपनी जगह बनाई है। साथ ही राजीव गांधी नवोदय विद्यालय और हिम ज्योति आवासीय विद्यालयों में इस विद्यालय के छात्र चयनित हुए हैं। संस्थाध्यक्ष द्वारा विद्यालय में कब व बुलबुल की इकाई भी गठित की गई हैं। इन नवाचारी, समर्पित व सफल प्रयासों के लिए श्रीमती नैथानी को वर्ष 2017 में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्रीमती नैथानी बताती हैं, कि जब वह इस विद्यालय में आयीं तो अभिभावकों और विद्यालय के बीच बेहतर संबंध बनाने हेतु एस.एम.सी. की परम्परागत रूप से होने वाली बैठकों के अतिरिक्त कुछ अभिनव प्रयास भी किए। इसका मुख्य कारण इस तरह की बैठकों में अभिभावकों की प्रतिभागिता बहुत कम रहती थी। कारणों की तलाश करने पर जो मुख्य बातें निकल कर आई वो निम्नवत हैं।

1– विद्यालय में आयोजित सामूहिक बैठकों में अभिभावक अपनी बात कहने में संकोच महसूस करते हैं।

2– अधिकांश अभिभावक कृषि, मजदूरी आदि कार्यों की व्यस्तता के कारण इन बैठकों में उपस्थित नहीं हो पाते।

3– वे अभिभावक जिनके पाल्यों के सीखने का स्तर अन्य छात्रों की तुलना में न्यून होता है, अपने पाल्यों की कमियों को बार–बार सुनकर बैठकों में आने के लिए उत्साहित नहीं होते।

4– अभिभावक के रूप में प्रायः उनकी माता, दादी या नानी होती हैं। कई बार विद्यालय आने–जाने के लिए उपयुक्त साथ ना मिलने के कारण वो इन बैठकों में प्रतिभाग नहीं कर पातीं।

ऐसे और भी कई कारण हैं, जो इन बैठकों में अभिभावकों की उपस्थिति को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप अभिभावकों से बच्चे के अकादमिक व अन्य सम्बद्ध पहलुओं पर स्पष्ट व खुली बातचीत संभव नहीं हो पाती थी।

इस पर श्रीमती नैथानी ने इन बैठकों के स्वरूपों व विद्यालय में होने वाले उत्सवों का स्वरूप बदलने का प्रयास किया। इस क्रम में योजनावद्ध तरीके से अभिभावकों को लोकगीत, लोक नृत्य व भजन आदि लोक संस्कृति से जुड़े कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु विद्यालय में आमंत्रित किया। इसके साथ–साथ विद्यालय में छात्रों के जन्मदिवस को भी उत्सव के रूप में मनाने की नई परंपरा प्रारंभ की। ये सभी नई पहलें थी, जिन्होंने अभिभावकों एवं विद्यालय के मध्य एक सहज सम्मान युक्त विश्वसनीय व आत्मिक सम्बन्ध बनाने में मदद की।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय कांडाखाल में शिक्षक अभिभावकों की नवाचारी बैठकों की झलकियां

2. पढ़ाई–लिखाई से जो मिलता फल, वहीं कहलाए अधिगम प्रतिफल–

सीखने की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है, जिसमें समय–समय पर कुछ पड़ाव आते रहते हैं। सीखते रहने के दौरान आये पड़ाव इस बात का इशारा भी करते हैं कि सीखने वाले के द्वारा तय समय और प्राप्त संसाधनों की मदद से क्या कुछ सीखा जा चुका है, या फिर क्या कुछ सीखना रह गया है? अधिगम प्रतिफल भी सीखने की यात्रा का एक पड़ाव है, जो किसी खास विषय में समयबद्ध सीखी गयी दक्षता के बारे में जानकारी देता है। यह एक तरह का उत्प्रेरक भी है, जो सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक अभिभावक के द्वारा समुचित संसाधन, अनुभव और मार्गदर्शन से इसकी गुणवत्ता में वृद्धि कर सकता है। इसके लिए सभी के द्वारा सचेत होकर सतत् एवं व्यापक रूप से समग्र प्रयासों की आवश्यकता है।

डा. अतुल बमराडा राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर पौडी गढ़वाल में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों के अतिरिक्त सूचना प्रौद्योगिकी का समुचित प्रयोग कर उन्होनें उच्च गुणवत्ता पूर्ण ई–सामग्री का निर्माण किया और इस सामग्री को विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों द्वारा कोविड काल एवम उसके बाद भी देशभर के शिक्षार्थियों द्वारा प्रयोग किया जा रहा है। इसके साथ ही कोविड महामारी के दौरान शिक्षार्थियों में हुये पढ़ने एवम् लिखने के कौशल का ह्रास हुआ। इस कौशल का विकास करने हेतु अतुल द्वारा मिशन मोड में कार्य कर विभिन्न नवाचारी तकनीकियों का प्रयोग कर रहे हैं।

3. करनी हैं कुछ बातें खास हम आये हैं आपके पास –

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि अभिभावक विभिन्न व्यस्तताओं कें कारण विद्यालय में आयोजित बैठकों में सक्रिय सहभागिता नहीं कर पाते हैं। ऐसे में विद्यालय प्रमुख ऐसी योजनाएं बना सकते हैं, जिनके द्वारा अभिभावकों से उनके कार्य स्थलों (जैसे– खेतों में जब सभी किसान काम कर रहे हों या गांव में चल रहे मनरेगा के अन्तर्गत निर्माण कार्यों के दौरान) पर जाकर उनके पाल्यों के सम्बन्ध में बातचीत की जा सकती है। इस प्रक्रिया में जहाँ उन्हें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अपने महत्व का अहसास होगा वहीं विद्यालयों से उनके रिश्ते और मजबूत व सहज होंगे जिसका लाभ शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मिलेगा।

रा0इ0का0 डांगचौरा के शिक्षकों की ग्रामीणों से उनके कार्यस्थल में बातचीत

4. आप सिखाएं, हम सीखें (बाल शोध मेला)–

मिलजुल कर सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे सीखी हुयी बात लम्बे समय तक याद रहती है। क्योंकि बच्चे अपने स्वभाव से ही खोजी प्रवृति के होते हैं। अतः ऐसे में उनके इस कौशल को सीखने की प्रक्रिया में बाल शोध मेले में शामिल कर देने से उनके सीखने की गति और तरीके में वृद्धि सम्भव है। इसके तहत बच्चों को वैसे तो किसी भी अवधारणा के बारे में शोध करने का कार्य दिया जा सकता है, किन्तु अगर इस बाल शोध मेले में आसान या सरल संबोध के बदले थोड़े कठिन या जटिल लगने वाले संबोध को शामिल किया जाये तो यह उनके लिए खेल–खेल में सीखना हो सकता है। बाल शोध मेले के सफल आयोजन के लिए ये महत्वपूर्ण है कि सम्बन्धित शिक्षकों और प्रधानाध्यापक के साथ मिलकर पूरे दिन की एक व्यवस्थित रूपरेखा बनायी जाये। कई बार इस रूपरेखा के अभाव में व्यवस्थागत परेशानियां तो आती ही हैं, साथ बहुत परिश्रम पूर्वक की गयी तैयारी भी उस रूप में परिलक्षित नहीं हो पाती जैसा कि अपेक्षित होता है। यह समझना बहुत ही जरूरी है, कि बाल शोध मेला कुछ प्रोजेक्टों का प्रदर्शन मात्र नहीं है। इसमें किसी अवधारणा को बेहतर समझने के क्रम में बच्चे कुछ प्रोजेक्ट बनाते हैं, और उनको प्रस्तुत भी करते हैं। बाल शोध मेले का मूल उद्देश्य बच्चों को कुछ करके सीखने के अवसर देकर उनके परिवेश को बेहतर समझने की प्रक्रिया में मदद करना है। इस प्रक्रिया में वे

किसी भी शोध के विभिन्न चरणों को समझ पायें, उस पर अपनी राय बना पायें, अपनी राय को दूसरों तक पहुँचा पाये, यह महत्वपूर्ण है।

<u>शिक्षा विभाग और अजीम प्रेमजी फाउन्डेशन की संयुक्त पहल से जनपद उत्तरकाशी में आयोजित बालशोध मेले की झलकियाँ</u>

5. व्यक्तिगत सम्पर्क –

यदि अभिभावक अपने किसी व्यक्तिगत समस्या के चलते शिक्षक अभिभावक बैठक में सम्मिलित नहीं हो पा रहा है, तो उनके घर जाकर भी व्यक्तिगत संपर्क कर संवाद किया जा सकता है। इससे छात्र की सामाजिक, आर्थिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि को नजदीक से समझने का भी मौका मिल जाता है।

खेत में जाकर शिक्षक का अभिभावकों से संवाद

विद्यालय में छात्र सम्बन्धित नियमित कार्य व अध्ययन के आकलन के लिए अभिभावकों हेतु चेकलिस्ट

(प्राथमिक विद्यालय हेतु)

क्रमांक	विवरण	✓ या ×
1	कक्षा कार्य किया है।	
2	कक्षा कार्य की जांच हुई है।	
3	गृह कार्य दिया गया है।	
4	शिक्षक से बातचीत हुई है।	
5	शिक्षक द्वारा सवाल पूछे गए।	
6	शिक्षक से सवाल पूछे गए।	
7	आज हमने खेल खेला।	
8	शिक्षक को गीत कहानी कविता सुनाई।	
9	क्या किसी अध्यापक द्वारा डांटा गया।	
10	किसी विद्यार्थी द्वारा परेशान तो नहीं किया गया।	
11	विद्यालय में किसी प्रकार का भेदभाव तो नहीं किया गया।	
12	शिक्षक द्वारा कोई गतिविधि करवाई गई।	

स्वमूल्यांकन प्रपत्र

प्रश्न 1– विद्यार्थी की अकादमिक प्रगति हेतु उत्तरदायी होता है –

1. अभिभावक
2. अध्यापक
3. स्वयं विद्यार्थी
4. उपरोक्त सभी

प्रश्न 2– विद्यालय के सेवित क्षेत्र के समुदाय के अकादमिक सहयोग हेतु जागरूक करने के प्रयासों का नेतृत्वकर्ता होता है–

1. ग्राम प्रधान
2. विद्यालय प्रमुख
3. विद्यालय के शिक्षक
4. खंड शिक्षा अधिकारी

प्रश्न 3– एक अशिक्षित या कम पढ़ा लिखा अभिभावक भी एक जागरूक अभिभावक की भूमिका निभा सकता है। इस कथन से आप –

1. सहमत हैं
2. असहमत हैं
3. कुछ कह नही सकते
4. आंशिक सहमत

प्रश्न 4– प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में अहम भूमिका होती है–

1. उसकी माता की
2. उसके सहपाठियों की
3. स्वयं के अवलोकन की
4. उपरोक्त सभी

प्रश्न 5– अभिभावकों के सक्रिय सहयोग के बिना छात्र का चहुमुखी विकास संभव नहीं है, आप इस कथन से–

1. सहमत हैं।
2. आंशिक सहमत।
3. असहमत हैं।
4. कुछ कह नहीं सकते।

प्रश्न 6— विद्यालय प्रमुख अभिभावकों को अधिगम प्रतिफल की जानकारी दे सकता है—

1. अधिगम प्रतिफल की सूची देकर
2. अधिगम प्रतिफल को समझा कर
3. सरल उदाहरणों की मदद लेकर
4. उपरोक्त सभी क्रियाकलापों से

प्रश्न 7— विद्यालय प्रमुख हेतु छात्र—छात्राओं की अधिगम प्रगति की सूचना के लिए विद्यालय में सबसे बेहतर स्रोत है—

1. शिक्षक
2. छात्र की अभ्यास पुस्तिका
3. छात्र के अभिभावक
4. छात्र

प्रश्न 8— कुछ अभिभावक बैठकों में प्रतिभाग नहीं कर रहे हैं, इस हेतु एक विद्यालय प्रमुख को करना चाहिए—

1. कारणों की पहचान कर, योजना बनाना
2. समस्या को अनदेखा करना
3. टेलीफोन के माध्यम से संवाद करना
4. छात्र को जिम्मेदारी देना

प्रश्न 9— शिक्षक—शिक्षिका द्विपक्षीय और स्वस्थ संवाद बनाये रख सकते हैं यदि वे —

1. माता—पिता/अभिभावकों से प्राप्त संदेश प्राप्त करते हैं और उन पर अपनी टिप्पणी जोड़ कर उसे आगे बढ़ाते हैं।
2. अभिभावकों के संदेश मिलने पर अग्रिम कार्यवाही नहीं कर पाते।
3. चुनिन्दा अभिभावकों से ही बात और संवाद कर पाते हैं।

प्रश्न 10— अभिभावक व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से उपयुक्त गतिविधियों को प्रारम्भ करा सकते हैं। इस हेतु किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

1. बच्चे का परिवेश (वातावरण) तथा अनुभव
2. आसपास का परिवेश।
3. बच्चे और गाँव का परिवेश।
4. विद्यालय का परिवेश व अनुभव।

समेकन –

शिक्षा समाजीकरण का एक मुख्य माध्यम है। शिक्षा समाज से पृथक होकर संचालित नहीं हो सकती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है, कि अधिगम प्राप्ति में भी सम्बन्धित हितभागियों का सक्रिय सहयोग सुनिश्चित किया जाय। चूंकि शिक्षा कक्षा–कक्ष की चाहरदीवारियों से इतर बाह्य परिवेश में भी होती है। इस क्रम में संस्था प्रमुख नियमित अंतराल में सभी हितधारको (जिसमें कि माता–पिता और अभिभावक मुख्य हैं) के साथ औपचारिक व अनौपचारिक संवाद बनाये रखे। अभिभावकों को उनके पाल्यों के उन पहलुओं की जानकारी दे जिनमें माता–पिता और अभिभावकों से सहयोग और समर्थन की अपेक्षा है। इस तरह नियमित संवाद विमर्श और क्रियाकलापो के फलस्वरूप संस्थाध्यक्ष/विद्यालय नेतृत्व साझे और सामूहिक प्रयासों से बच्चों के वांछित बेहतर अधिगम प्राप्ति में अपना सहयोग दे सकते हैं।

स्व मूल्यांकन प्रपत्र का उत्तर पत्रक		
क्रमांक	**प्रश्न**	**सही विकल्प**
1	1	4
2	2	2
3	3	1
4	4	4
5	5	2
6	6	4
7	7	1
8	8	1
9	9	1
10	10	1